मंगलायतन विश्वविद्यालय में –

दर्शन-विज्ञान विभाग का शुभारम्भ

जयपुर (राज.) : यहाँ श्री टोडरमल स्मारक भवन में आयोजित शिक्षण शिविर के अवसर पर दिनांक 25 जुलाई को उस समय सारा वातावरण अत्यन्त उल्लासमय हो गया, जब मंगलायतन विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. सतीशचंद्रजी जैन ने घोषणा की कि अब मंगलायतन विश्वविद्यालय में जैनदर्शन के सुव्यवस्थित अध्ययन हेतु दर्शन विज्ञान विभाग की स्थापना कर दी गयी है। साथ ही यह भी घोषणा की गई कि इस विभाग के प्रमुख (डीन) डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल को बनाया गया है एवं डॉ. जयन्तीलालजी जैन चेन्नई इस विभाग के निदेशक होंगे।

कार्यक्रम की अध्यक्षता डॉ. उत्तमचंदजी जैन ने की। मुख्य अतिथि के रूप में श्री बसन्तभाई दोशी मुम्बई एवं विशिष्ट अतिथि के रूप में पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल जयपुर उपस्थित थे।

विश्वविद्यालय की इस योजना की पृष्ठभूमि से उपस्थित जनसमुदाय को अवगत कराते हुए श्री देवेन्द्रजी जैन मंगलायतन ने बताया कि इस विश्वविद्यालय की स्थापना के साथ ही वीतरागी तत्त्वज्ञान के प्रचार-प्रसार का एक स्वप्न था, जो अब साकार रूप लेने जा रहा है। इस विभाग के अन्तर्गत संचालित पाठ्यक्रम की जानकारी देते हुए डॉ. जयन्तीलालजी जैन ने बताया कि यह विभाग डिप्लोमा कोर्स, बैचलर डिग्री एवं मास्टर डिग्री कोर्स नियमित कक्षाओं तथा पत्राचार के माध्यम से सर्वप्रथम हिन्दी एवं अंग्रेजी माध्यम से प्रारम्भ करने जा रहा है, जिसे बाद में अन्य भाषाओं में भी संचालित किया जायेगा। इस हेतु समस्त सरकारी औपचारिकताएँ कर ली गई हैं और शीघ्र ही यह पाठ्यक्रम प्रारम्भ हो जायेगा।

अपने उद्‌बोधन में डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल ने बताया कि इस सन्दर्भ में मंगलायतन विश्वविद्यालय के चेयरमैन श्री पवनजी जैन से मेरी अनेकों बार चर्चा-वार्ता होती रही है और इसके सार्थक परिणाम अब हम सबके सामने हैं। उन्होंने विश्व समुदाय से इस पाठ्यक्रम में जुड़कर जैनदर्शन का सर्वांगीण अध्ययन करने का अनुरोध भी किया। कार्यक्रम के अन्तर्गत मंगलायतन विश्वविद्यालय की ओर से कुलपति डॉ. सतीशचंद्रजी जैन, डॉ. जयन्तीलालजी जैन, डॉ. ओमप्रकाशजी जैन एवं तीर्थधाम मंगलायतन की ओर से पण्डित देवेन्द्रकुमारजी जैन ने मंचासीन अतिथियों का स्वागत किया। साथ ही डॉ. भारिल्ल का माल्यार्पण करके, श्रीफल भेंटकर, अंगवस्त्र पहिनाकर एवं शॉल ओढाकर मंगलायतन विश्वविद्यालय परिवार की ओर से स्वागत किया गया। इसी प्रकार पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट की ओर से भी डॉ. सतीशचंद्रजी जैन आदि सभी महानुभावों का भव्य स्वागत किया गया।

ज्ञातव्य है कि श्री टोडरमल मुक्त विद्यापीठ द्वारा स्मारक भवन से गत पांच वर्षों से पत्राचार पाठ्यक्रम सफलतापूर्वक संचालित किया जा रहा है, जिसमें देश-विदेश के लगभग 1700 विद्यार्थी अध्ययनरत हैं। इस गतिविधि से प्रेरणा पाकर श्री पवनजी जैन मंगलायतन ने इस कोर्स को मंगलायतन विश्वविद्यालय द्वारा संचालित करने के लिए विशेष प्रयत्न किये हैं।

वीतराग-विज्ञान

वीतराग-विज्ञान ही, तीन लोक में सार।
वीतराग-विज्ञान का , घर-घर होय प्रसार।।

वर्ष : 31 (वीर नि. संवत् - 2538) 350 अंक : 2

धनि ते साधु रहत ...

धनि ते साधु रहत वनमाहीं ।।टेक।।

शत्रु-मित्र सुख-दुख सम जानैं, दरसन देखत पाप पलाहीं।।
धनि ते साधु रहत वनमाहीं... ।।1।।

अट्ठाईस मूलगुण धारैं, मन-वच-काय चपलता नाहीं।
ग्रीषम शैल-शिखा हिम तटिनी, पावस बरखा अधिक सहाहीं।।
धनि ते साधु रहत वनमाहीं... ।।2।।

क्रोध-मान-छल-लोभ न जानैं, राग-दोष नाहीं उन पाहीं।
अमल अखण्डित चिद्‌गुण मंडित, ब्रह्मज्ञान में लीन रहाहीं।।
धनि ते साधु रहत वनमाहीं... ।।3।।

तेई साधु लहैं केवलपद, आठ काठ दह शिवपुर जाहीं।
'द्यानत' भवि तिनके गुण गावैं, पावैं शिवसुख दुःख नसाहीं।।
धनि ते साधु रहत वनमाहीं... ।।4।।

– कविवर पण्डित द्यानतरायजी

छहढाला प्रवचन

आस्रव एवं बंध तत्त्व

यों अजीव अब आस्रव सुनिये, मन-वच-काय त्रियोगा।
मिथ्या अविरत अरु कषाय, परमाद सहित उपयोगा।।८।।
ये ही आतम को दु:ख कारण, तातैं इनको तजिये।
जीवप्रदेश बँधै विधि सों सो, बंधन कबहुँ न सजिये।।९।।

(सुप्रसिद्ध आध्यात्मिक विद्वान पण्डित दौलतरामजीकृत छहढाला पर गुरुदेवश्री के प्रवचन पाठकों के लाभार्थ यहाँ प्रस्तुत किये जा रहे हैं।)

अब आस्रव तथा बन्ध तत्त्व का वर्णन करते हैं - मन-वचन-काय योग तथा मिथ्यात्व-अव्रत-प्रमाद और कषाय सहित मलिन उपयोग कर्म के आस्रव के कारण हैं; ये आस्रवभाव आत्मा को दु:ख के कारण हैं; अत: वे त्यागने योग्य हैं। पाप हो या पुण्य, दोनों को आस्रव में ही गिनकर छोड़ने योग्य कहा है। पाप आस्रव छोड़ने योग्य और पुण्य आस्रव आदरने योग्य - ऐसा नहीं कहा। उसीप्रकार बंधतत्त्व में भी पापबंध और पुण्यबंध दोनों को समझ लेना। मिथ्यात्वादि भावों के कारण आत्मप्रदेशों में कर्मों का बन्धन होता है, वह बन्धतत्त्व है, जीव को दु:ख का कारण है; अत: ये मिथ्यात्वादि बन्धभाव भी करने योग्य नहीं हैं।

भाई ! तुम्हारे दुख का कारण तुम्हारा मिथ्यात्व तथा क्रोधादि भाव ही हैं; अत: आस्रव-बन्ध के कारणरूप उन भावों को छोड़ना चाहिए। जिस किसी भाव से जीव का किंचित् भी आस्रव या बन्ध हो, वह भाव अच्छा नहीं, हितरूप नहीं, करने जैसा नहीं; किन्तु छोड़ने जैसा है - ऐसा सम्यग्दृष्टि जीव मानते हैं। जो इससे विपरीत माने, उसको आस्रव-बन्ध तत्त्व की श्रद्धा में भूल है।

भाई ! तुम्हारे हित के लिए प्रयोजनभूत तत्त्वों को पहचानो। जीव और अजीव दोनों तत्त्व भिन्न हैं, उनमें जिसके जो गुण-पर्याय हो, उसी के वे समझने चाहिए, एक का दूसरे में मिलान नहीं करना चाहिए एवं जीव के ज्ञानादि स्वभावभाव तथा रागादि विभावभाव को भी भिन्न-भिन्न पहचानकर तत्त्वों की सच्ची श्रद्धा करनी चाहिए।

प्रश्न - क्या सम्यग्दृष्टि मेंढक आदि तिर्यंच को भी यह सब ज्ञान होता है?

उत्तर - हाँ, शब्द भले उन्हें न आते हों; किन्तु उनके ज्ञान में सातों तत्त्वों का भावभासन आ जाता है। सम्यग्दृष्टि मेंढक, सर्प, सिंह, हाथी आदि भी ऐसी ही तत्त्वश्रद्धा करते हैं, विपरीत मान्यता उन्हें नहीं होती; सम्यग्दृष्टि मेंढक आदि की भी

शुद्धात्मा की प्रतीति गणधरदेव जैसी ही है। अंतर के भाव में उन्हें आत्मा का आनन्द अच्छा लगता है और रागादि आस्रव अच्छे नहीं लगते। शुभराग का वेदन हो, तब वे ऐसा नहीं मानते कि यह मुझे आनन्द का वेदन है। शुभराग के वेदन में भी उन्हें दु:ख लगता है; अत: आस्रव दु:खदायक है, हेय है - ऐसी श्रद्धा उनके भाव में आ गई और आनन्द अर्थात् संवर-निर्जरा का भाव उपादेय है - ऐसी श्रद्धा भी आ गई। अंतर में आत्मा आनन्दस्वरूप है - ऐसा जो वेदन होता है, उसे ही वे 'आत्मा' समझते हैं और इससे विरुद्धभाव आत्मा नहीं है - यह बात भी उसमें आ ही जाती है। शुभ या अशुभराग वृत्तियाँ उन्हें दु:खरूप लगती हैं; अत: वे उन्हें छोड़ने का अभिप्राय रखते हैं अर्थात् आस्रव तथा बन्ध को हेय समझते हैं और आनन्द के वेदनरूप संवर-निर्जरा की वृद्धि चाहते हैं अर्थात् संवर-निर्जरा-मोक्ष को उपादेय समझते हैं। इसतरह उनके वेदन के भाव में सातों तत्त्वों की अविपरीत श्रद्धा समा जाती है। वे सम्यग्दृष्टि मेंढक भी ऐसा नहीं मानते कि शरीर है, सो मैं हूँ अथवा ईश्वर ने मुझे बनाया अथवा रागादिभाव सुखरूप है। वे तो शरीर से भिन्न, राग से भिन्न, शाश्वत ज्ञानस्वरूप ही अपने को अनुभव में लेते हैं और ऐसी ही श्रद्धा करते हैं।

इसप्रकार सम्यग्दृष्टि जीव अपने हित के लिए प्रयोजनभूत तत्त्व को अच्छी तरह पहचानते हैं। जीव और अजीव मूलवस्तु तथा जीव के सुख-दुख के कारणरूप पर्याय का जानना प्रयोजनरूप है और सात तत्त्व में ये सब आ जाते हैं। घट अजीव की पर्याय है और वह मेरा कार्य नहीं है - ऐसा धर्मी जानते हैं, किन्तु वह घट कहाँ बना ? कब बना ? उसके लिए मिट्टी कहाँ से आई ? उसके बनने में कौन कुम्हार निमित्त था ? ये सब जानना अप्रयोजनरूप है - उसके साथ जीवों के हित-अहित का संबंध नहीं है। उसको जानने से जीव का हित नहीं हो जाता और उसको न जानने से जीव का हित अटक नहीं जाता; परन्तु चेतन लक्षणरूप जीव क्या है ? उसकी अंतरात्मा आदि दशायें कैसी हैं ? उनका ज्ञान (शब्दज्ञान नहीं, किन्तु भावभासन रूप ज्ञान) धर्मी के अवश्य होता है। मैं चेतन हूँ; मेरे चेतन का कोई अंश अजीव में नहीं है और अजीव का कोई अंश चेतन में नहीं है। चेतन के सभी गुण चेतन में हैं, जड़ के सभी गुण जड़ में हैं, दोनों की अत्यन्त भिन्नता है। जीव-अजीव के गुण भिन्न, जीव-अजीव की पर्याय भिन्न; ऐसे प्रत्येक द्रव्य अपने-अपने गुण-पर्याय के धारक हैं, किसी का अंश दूसरे में नहीं मिलता। उन्हें सर्वज्ञ के मार्ग अनुसार अच्छी तरह पहचानना चाहिए।

चेतना लक्षणरूप जीव की पर्याय के तीन प्रकार - बहिरात्मा, अंतरात्मा, परमात्मा में से बहिरात्मा में आस्रव तथा बन्ध तत्त्व आ गये; अंतरात्मा में संवर तथा निर्जरा तत्त्व आ गये; परमात्मा में मोक्ष तत्त्व आया।

आस्रव तथा बन्ध में मिथ्यात्व प्रधान है; तदुपरान्त अव्रत, प्रमाद, कषाय और योग - ये भी आस्रव तथा बन्ध के कारण हैं। बाह्य में होने वाली शरीर की क्रिया तो अजीव तत्त्व की दशा है, उसमें जीव के आस्रव-बन्ध या संवर-निर्जरा नहीं होते। जीव के योग तथा उपयोग की अशुद्ध प्रवृत्ति आस्रव और बन्ध है और शुद्धोपयोग की प्रवृत्ति संवर-निर्जरा है; पूर्ण शुद्धता मोक्ष है। भाई, तुम्हारी अवस्था को तुम जानो और उनके निमित्तरूप पुद्गल कर्म की अवस्था को तुमसे भिन्न अजीवरूप समझो; उन तत्त्वों को जानकर उनमें से अपने हितरूप तत्त्व को ग्रहण करो और दु:खरूप तत्त्व को छोड़ो।

देखो ! अभी ऐसा तत्त्वनिर्णय हो सके, इतनी ज्ञानशक्ति महाभाग्य से मिली है; अत: तत्त्वनिर्णय करने का उपदेश है। अपने हित का अभिलाषी जीव ऐसा निर्णय अवश्य करता है। अरे ! ऐसा उत्तम सुयोग पाकर भी जो तत्त्वनिर्णय में अपनी बुद्धि को नहीं लगाते और कुमार्ग के सेवन में अवसर खो देते हैं, उनके दुर्भाग्य का क्या कहना ? वे तत्त्वनिर्णय के बिना अपना मनुष्य जन्म व्यर्थ गँवा देंगे।

यहाँ ऐसा कहा कि अनन्त द्रव्य, जिसमें अवकाश ले रहे हैं - ऐसे आकाश को भी तुम पहचानो। अहा ! ज्ञान की कितनी विशालता है। अनन्त जीव, उनसे अनन्तानंतगुने पुद्गल, धर्मास्तिकाय आदि सूक्ष्म अरूपी द्रव्य - ये सब द्रव्य भी जिसके अनन्तवें भाग में समा जाये - इतना बड़ा अनन्त सर्वव्यापी आकाश, उस आकाश को भी जो अपने अनन्तवें भाग की शक्ति से जान ले - ऐसा महान ज्ञानसामर्थ्य, उसका धारक यह जीव स्वयं है। अनन्त आकाश का विचार करने पर अपने ऐसे महान ज्ञानसामर्थ्य का भी निर्णय हो जाता है। ऐसे बड़े आकाश की और उससे भी महान ज्ञानसामर्थ्य की बात सर्वज्ञदेव के जैनशासन के सिवा अन्यत्र कहीं भी नहीं हो सकती और सर्वज्ञ के भक्त सम्यग्दृष्टि के बिना ऐसे तत्त्व का सच्चा निर्णय दूसरा कोई नहीं कर सकता।

अहो ! आत्मा के हित के लिए जैनधर्म के ऐसे तत्त्व का अभ्यास करना चाहिए। ऐसा प्रबन्ध करना चाहिए कि विद्यार्थी भी छुट्टियों में खेल-कूद के बदले में ऐसे वीतरागी तत्त्व का अभ्यास करें - जिससे उनका जीवन सुखी हो। हमारे भगवान के देखे हुए तथा कहे हुए छह द्रव्य कैसे हैं तथा उनके प्रत्येक के मुख्य लक्षण (विशेष गुण) क्या हैं ? किस भाव से जीव सुखी है और किस भाव से वह दु:खी होता है ? यह पहचानना चाहिए।

जीव स्वयं को जाने और सभी पदार्थों को भी जाने - ऐसी शक्ति उसमें ही है, अन्य किसी में नहीं।

सभी पदार्थों के भी रहने में निमित्त हो - ऐसी ताकत (ऐसा स्वभाव) आकाशद्रव्य

में ही है, अन्य किसी में नहीं (पदार्थ रहते तो हैं स्वक्षेत्र में, आकाश उनमें निमित्त हैं।) आप स्वयं परिणमें और सभी पदार्थों के भी परिणमन में निमित्त हो ऐसा स्वभाव कालद्रव्य में ही है, अन्य किसी में नहीं। (पदार्थ का परिणमन तो स्वपर्याय से होता है, काल उनमें निमित्त है।)

इसप्रकार सर्वज्ञदेव के उपदेश अनुसार जगत के पदार्थों का ज्ञान करने की छद्मस्थ जीव में ताकत है। सर्वज्ञमार्ग से विपरीत किसी बात को सम्यग्दृष्टि नहीं मानते। जो आत्मा सर्वज्ञ-वीतराग है, वही परमेश्वर है। वे परमेश्वर जगत के कर्ता नहीं हैं। स्वयंसिद्ध ऐसे इस जगत के कर्ता कोई ईश्वर नहीं हैं। जैसे ईश्वर जगत् का कर्ता नहीं है, वैसे निमित्तरूप वस्तु अन्य वस्तु की कर्ता नहीं है। जीव और अजीव ये सब जगत की स्वतंत्र वस्तुयें हैं और वे अपनी-अपनी पर्याय को करती हैं; ईश्वर उनके साक्षीमात्र ज्ञाता हैं और सभी जीव ऐसे ही साक्षीस्वभावी हैं - ऐसा धर्मी जानते हैं।

जगत के पदार्थ स्वयं सत् हैं, सर्वज्ञ ने उन्हें सत् जाना है और वाणी से भी ऐसा कहा है; इसप्रकार सत् वस्तु, उसका ज्ञान और उसका कथन - इन तीनों का मेल है; उसकी पहचान से सच्ची श्रद्धा होती है। जीव को सर्वज्ञ का सच्चा स्वरूप तब ही समझ में आता है, जबकि वह उनके जैसे अपने आत्मा के स्वसन्मुख होकर निश्चय सम्यग्दर्शन प्रगट करे। ज्ञानस्वभावी आत्मा के अनुभव के बिना कोई ऐसा कहे कि मैंने सर्वज्ञ को पहचान लिया तो वह यथार्थ नहीं है; क्योंकि आत्मा की पहचानपूर्वक ही सर्वज्ञ की पहचान होती है। ज्ञान की शक्ति इतनी महान है कि तीन काल की पर्यायों सहित समस्त पदार्थों को एक साथ ज्ञान का निमित्त बनाती है, कोई ज्ञेय बाकी नहीं रहता। यदि ज्ञेय बाकी रह जाये तो ज्ञान अपूर्ण रह जाये, तब उसे सर्वज्ञ कौन कहे ?

जिससे जीव को दु:ख होता है - ऐसे आस्रव तथा बन्ध को कभी भला मत जानो, उसे छोड़कर सम्यग्दर्शनादि में लगो - ऐसा उपदेश है। जीव का असंख्यप्रदेश जब चंचल बने अर्थात् योग का कंपन हो, तब मन-वचन या काया जो उसमें निमित्त हो, उसप्रकार का वह योग कहलाता है और उससे कर्म आते हैं तथा मिथ्यात्व-कषायादि मलिनभावों के अनुसार उस कर्म में स्थिति-अनुभागरूप बन्धन होता है। सम्यग्दृष्टि जीव को मिथ्यात्वजनित आस्रव-बन्ध नहीं है; परन्तु अभी अव्रतादि है, उतना आस्रव-बन्ध भी है, किन्तु वह उसे दु:खरूप जानकर, स्वभाव से विपरीत जानकर हेयरूप समझता है। आत्मा का ज्ञानस्वभाव आस्रव तथा बन्धरहित है, उसे ही वह उपादेय समझता है।

इसप्रकार सात तत्त्व में आस्रव तथा बन्ध दु:खदायक होने से छोड़ने योग्य कहे गये हैं; अब उनके विपरीत संवर तथा निर्जरातत्त्व सुखदायक होने से आदरनेयोग्य हैं - ऐसा कहते हैं। ●●●

नियमसार प्रवचन –

आत्मा कैसा है ?

परमपूज्य सर्वश्रेष्ठ दिगम्बराचार्य कुन्दकुन्द के प्रसिद्ध परमागम नियमसार के शुद्धभावाधिकार की 43वीं गाथा पर हुये आध्यात्मिकसत्पुरुष श्री कानजीस्वामी के अध्यात्मरस गर्भित प्रवचनों का संक्षिप्त सार यहाँ दिया जा रहा है।

गाथा मूलत: इसप्रकार है –

णिद्दंडो णिद्दंद्दो णिम्ममओ णिक्कलो णिरालंबो।
णीरागो णिद्दोसो णिम्मूढो णिब्भयो अप्पा।।४३।।
निर्दण्ड है निर्द्वन्द है यह निरालम्बी आतमा।
निर्देह है निर्मूढ है निर्भयी निर्मम आतमा।।४३।।

यह आत्मा निर्दंड, निर्द्वन्द, निर्मम, नि:शरीर, निरालम्ब, निराग, निर्दोष, निर्मूढ और निर्भय है।

(गतांक से आगे ...)

मुनिराज कहते हैं कि शुद्ध आत्मा मेरी रक्षा करे। कैसा है शुद्ध आत्मा?

यहाँ त्रिकाली स्वभाव की बात करते हैं। निमित्तादि परपदार्थ तथा पुण्य-पाप त्रिकालस्वभाव में नहीं हैं। उनकी बुद्धि छुड़ाने के लिये कहते हैं – कैसा है शुद्ध आत्मा ?

(१) यहाँ पाप का अर्थ विकार समझना। शुभ-अशुभ दोनों विकार-पाप हैं, शुद्ध आत्मा उनको छेदने का कुल्हाड़ा है।

(२) शुद्ध आत्मा में कर्म नहीं हैं। द्रव्यकर्म का और विकार की पर्याय के साथ निमित्त-नैमित्तिक सम्बन्ध है, वह ज्ञान करने के लिये है; किन्तु आदरणीय नहीं है, शुद्धभाव ही आदरणीय है। विकार पर्याय में है किन्तु त्रिकालस्वभाव में नहीं है – ऐसी अनेकान्त दृष्टि करे वह सम्यग्ज्ञानी है। विकार की रुचि करने पर त्रिकाली शुद्धभाव का अनादर हो जाता है तथा त्रिकाली शुद्धभाव का आदर करने पर विकार का नाश हो जाता है।

(३) शुद्ध आत्मा पर-परिणति से दूर है। परलक्ष से होने वाली सभी परिणतियाँ पर-परिणतियाँ हैं, शुद्ध आत्मा में उन सभी का अभाव है।

(४) समुद्र में जल का तूफान उछलता है; उसीप्रकार पर्यायबुद्धि में रागरूपी समुद्र का पूर उछलता है; परन्तु शुद्धस्वभाव में विकार नहीं है – ऐसा भान होने पर रागरूपी समुद्र का नाश होता है।

(५) सामान्य विकार की बात करके अब अनेक प्रकार बतलाते हैं। असंख्य शुभ और अशुभ विकार के प्रकार शुद्धात्मा में नहीं हैं – ऐसा भान होने पर दृष्टि से विकार हट जाता है और सम्पूर्ण स्थिरता होने पर सर्व प्रकार से विकार का नाश हो जाता है।

(६) पुन: कैसा है समयसार (शुद्ध आत्मा)? जैसे समुद्र जल से भरा हुआ है, वैसे ही शुद्ध आत्मा ज्ञान और आनन्द से भरपूर है। देखो! यहाँ सच्चा सुख बतलाते हैं। विवाह के समय महिलायें गाना गाती हैं और कहती हैं कि हमारे घर हाथी झूलते हैं, मोती के थाल भराये, ऐसा कह कर आनन्द मनाती हैं। घर में दमड़ी का भी ठिकाना न हो, तो भी इस प्रकार का उत्साह व्यक्त करती हैं, किन्तु वह उत्साह खोटा है।

दीपावली के दिन मिट्टी के दीपक जलाना तो जड़ की क्रिया है। अरे! अपने चैतन्य आत्मा के दरवाजे पर केवलज्ञानरूपी सूर्य प्रकट हो – ऐसा तू है, उसे देख! आत्मा सुख-सागर का नीर है, उस पानी को निकालकर विकार के ऊपर छिड़क दे तो विकार नष्ट हो जाय।

(७) आत्मा के शुद्ध-स्वभाव में विषय-वासना नहीं है। ऐसे शुद्ध आत्मा की श्रद्धा-ज्ञान और एकाग्रता करने पर पर्याय में रहने वाली विषय-वासना मिट जाती है।

अब टीकाकार मुनिराज कहते हैं कि ऐसा शुद्धात्मा शीघ्र मेरा रक्षण करे, अर्थात् मैं एकदम परिपूर्ण परमात्मदशा को प्राप्त हो जाऊँ – ऐसी भावना भाते हैं।

टीकाकार मुनिराज शुद्धात्मा के गीत अति उत्साह से, लौकिक लाज बिना, गा रहे हैं। त्रिकालसमयसार अथवा कारणपरमात्मा, यही रक्षण का कारण है। राज्य,पैसा, कुटुम्ब, दवा इत्यादि रक्षण करे – ऐसा नहीं है, त्रिकाल ज्ञायकभाव ही रक्षक है; इसप्रकार शुद्धात्मा की श्रद्धा-ज्ञान करना ही धर्म है।

(मालिनी)

जयति परमतत्त्वं तत्त्वनिष्णातपद्म-
प्रभमुनिहृदयाब्जे संस्थितं निर्विकारम्।
हतविविधविकल्पं कल्पनामात्ररम्याद्
भवभवसुखदु:खान्मुक्तमुक्तं बुधैर्यत्।।६३।।

(रोला)

बुधजन जिनको कहें कल्पनामात्र रम्य है
उन सुख-दुख से रहित नित्य जो निर्विकार है।
विविध विकल्प विहीन पद्मप्रभ मुनिवर मन में
जो संस्थित वह परमतत्त्व जयवंत रहे नित ॥६३॥

श्लोकार्थ : जो तत्त्वनिष्णात (वस्तुस्वरूप में निपुण) पद्मप्रभमुनि के हृदयकमल में सुस्थित है, जो निर्विकार है, जिसने विविध विकल्पों का हनन कर दिया है, और जिसे बुध पुरुषों ने कल्पनामात्ररम्य ऐसे भव-भव के सुखों से तथा दुःखों से मुक्त (रहित) कहा है, वह परमतत्त्व जयवन्त है।

यह टीकाकार मुनिराज पद्मप्रभ नाम से विख्यात हैं। वे तत्त्व में निष्णात है, वस्तु-स्वरूप में निपुण हैं, परमतत्त्व मुनिराज के हृदयकमल में स्थित है। कैसा है परमतत्त्व? परमतत्त्व में विकार नहीं है, अनेक प्रकार के विकल्प नहीं हैं - ऐसे तत्त्व के आश्रय से पर्याय में होने वाले विकार का अभाव हो जाता है। जैसे युद्ध में राजा के मर जाने पर उसकी सेना भी पलायमान हो जाती है, मरण तुल्य हो जाती है; वैसे ही मैं ज्ञानस्वभावी चैतन्य राजा हूँ - ऐसी दृष्टि होने पर विकार की सेना मृत तुल्य हो जाती है। यह परमतत्त्व रम्य है और लौकिक सुख-दुःख से रहित है। लौकिकजन तो रुपया, पैसा आदि में सुख मानते हैं, किन्तु वह तो कल्पनामात्र है। चक्रवर्ती और देवों का सुख भी कल्पनामात्र-रम्य है, अज्ञानी जीव ही उसमें सुख मानते हैं। जड़ का स्वामी जड़ ही होता है - आत्मा नहीं; आत्मा ने मकान, वैभवादि एकत्र किया नहीं, परवस्तु आत्मा में एक समय मात्र भी नहीं। स्वादिष्ट भोजन, सुन्दर वस्त्र मिलने पर अपने को सुखी मानता है, परन्तु यह सब मात्र काल्पनिक है - वास्तविक सुख इसमें नहीं। सातवें नरक में असह्य वेदना हो, किन्तु वह भी कल्पनामात्र दुःख है। सुख-दुःख संयोगों में नहीं है, किन्तु जीव सुख-दुःख की कल्पना कर लेता है। ऐसी कल्पना रहित त्रिकालीतत्त्व जैसे का तैसा पड़ा हुआ है, वह कहीं घट-बढ़ नहीं गया है। चाहे जितना पुण्य-पाप किया हो, तथापि वह तो ज्यों का त्यों है; अतः उसकी प्रतीति कर।

आचार्यदेव कहते हैं कि आत्मा को हीन मानने की कल्पना मत करो, उसे पुण्य-पाप वाला अथवा निमित्तवाला मत मानो। सादि अनन्तकाल तक स्थिर होने का अवसर आया है, उसके प्रकट होने पर संसार-क्लेश पुनः उत्पन्न नहीं होगा - ऐसा परमतत्त्व जयवन्त वर्तता है। **(क्रमशः)**

ज्ञान गोष्ठी

सायंकालीन तत्त्वचर्चा के समय विभिन्न मुमुक्षुओं द्वारा
पूज्य स्वामीजी से पूछे गये प्रश्न और स्वामीजी द्वारा दिये गये उत्तर

प्रश्न : जिससमय जीव हेय-उपादेय को यथार्थ समझे, उसीसमय हेय को छोड़कर उपादेय को ग्रहण करे अर्थात् सच्ची श्रद्धा के साथ ही साथ पूर्ण चारित्र भी होना चाहिये, परन्तु ऐसा होता तो है नहीं; इसलिए हम तो ऐसा मानते है कि जब यह जीव रागादि को त्यागकर चारित्र अंगीकार करे, तभी उसे सच्ची श्रद्धा होती है - ऐसा मानने में क्या दोष है ?

उत्तर : सम्यग्दर्शन का काम तो परिपूर्ण आत्मस्वभाव को ही मानना है, रागादि के ग्रहण-त्याग करने का काम सम्यग्दर्शन का नहीं है, वह तो चारित्र का अधिकार है। सच्ची श्रद्धा का कार्य यह है कि उपादेय की उपादेयरूप से और हेय की हेयरूप से प्रतीति करे, उपादेय को अंगीकार करना और हेय को छोड़ने का काम चारित्र का है, श्रद्धा का नहीं। राजपाट में होने पर भी और राग विद्यमान होने पर भी भरत चक्रवर्ती, श्रेणिक राजा, रामचन्द्रजी तथा सीताजी इत्यादि सम्यग्दृष्टि थे। सम्यग्दर्शन होने पर व्रतादि होना ही चाहिए और त्याग होना ही चाहिए - ऐसा कोई नियम नहीं है। हाँ, इतना अवश्य है कि सम्यग्दर्शन होने पर विपरीत अभिप्राय का - मिथ्या मान्यता का त्याग अवश्य हो जाता है।

प्रश्न : सम्यग्दृष्टि स्वर्ग से आता है तब माता के पेट में नौ महीने में निर्विकल्प उपयोग आता होगा या नहीं ?

उत्तर : यह बात ख्याल में है, लेकिन शास्त्राधार कोई मिलता नहीं। विचार तो अनेक आते हैं, लेकिन शास्त्राधार तो मिलना चाहिए न ?

प्रश्न : क्या मतिज्ञान और श्रुतज्ञान में सम्यग्दर्शन होता है ?

उत्तर : मतिज्ञानपूर्वक सम्यग्दर्शन होता है तो भी मतिज्ञान के समय आनन्द का वेदन नहीं है। श्रुतज्ञान में आनन्द का वेदन होता है अर्थात् श्रुतज्ञान में सम्यग्दर्शन का आनन्द आता है, तो भी मतिज्ञानपूर्वक श्रुतज्ञान में सम्यग्दर्शन होता है - ऐसा कहा जाता है।

समाचार दर्शन -

तीर्थधाम मंगलायतन में डॉ. भारिल्ल

मंगलायतन-अलीगढ (उ.प्र.) : यहाँ तीर्थधाम मंगलायतन में दिनांक 28 जुलाई से 7 अगस्त तक क्रमबद्धपर्याय पर विशेष शिविर का आयोजन किया गया। शिविर में अध्यापन हेतु पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली विशेष रूप से आये हुये थे, जिन्होंने प्रतिदिन तीनों समय 3-3 घंटे छात्रों को क्रमबद्धपर्याय विषय का विस्तृत अध्ययन कराया।

इसी दौरान पवनजी के स्वास्थ्य की कुशलक्षेम पूछने हेतु दिनांक 5 से 7 अगस्त को तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल मंगलायतन पहुँचे और उनके द्वारा क्रमबद्धपर्याय विषय पर 3 विशेष व्याख्यानों का लाभ मिला। डॉ. भारिल्ल ने बताया कि क्रमबद्धपर्याय जिनागम का चर्चित एवं अत्यन्त महत्वपूर्ण विषय है, जिसमें निश्चय-व्यवहार, निमित्त-उपादान आदि सभी सिद्धांत समा जाते हैं। प्रत्येक वस्तु निश्चित क्रमानुसार परिणमित होती है। किस वस्तु में, किस समय कौनसी पर्याय उत्पन्न होगी, यह निश्चित है। क्रमबद्धपर्याय वस्तु के परिणमन की व्यवस्था है। सर्वज्ञता के दर्पण में वस्तु के परिणमन की क्रमबद्ध व्यवस्था को सहज देखा जा सकता है। कोई भी वस्तु किसी के आधीन नहीं है। वह अपनी स्वाधीन योग्यतानुसार ही परिणमित होती है।

शिविर में प्रात: पूजन विधान के उपरान्त गुरुदेवश्री का सी.डी. प्रवचन भी क्रमबद्धपर्याय पर ही चलाया गया। सायंकाल जिनेन्द्र भक्ति का आयोजन किया गया। इस शिविर में ब्र. कैलाशचंदजी 'अचल' ललितपुर, पण्डित पीयूषजी शास्त्री जयपुर, पण्डित अशोकजी लुहाड़िया बिजौलिया, पण्डित संजयजी शास्त्री मंगलायतन, पण्डित सुधीरजी शास्त्री, डॉ. सतीशजी जैन एवं श्री विनीतजी जैन इत्यादि विद्वान भी उपस्थित थे।

आध्यात्मिक शिक्षण शिविर संपन्न

कोलारस-शिवपुरी (म.प्र.) : यहाँ होटल फूलराज परिसर स्थित श्री आदिनाथ जिनालय में दिनांक 15 से 22 जुलाई तक आध्यात्मिक शिक्षण शिविर एवं श्री सिद्धचक्र महामण्डल विधान का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर ब्र. अभिनन्दनजी शास्त्री खनियांधाना, पण्डित संजयजी शास्त्री मंगलायतन, पण्डित अनिलजी शास्त्री 'धवल' भोपाल, पण्डित अमितजी शास्त्री लुकवासा, पण्डित सुकुमालजी शास्त्री लुकवासा, पण्डित देवेन्द्रजी मंगलार्थी, पण्डित मांगीलालजी कोलारस, पण्डित गिरनारीलालजी कोलारस एवं पण्डित किशनमलजी कोलारस के प्रवचनों व कक्षाओं का लाभ मिला।

शिविर के ध्वजारोहणकर्ता श्री महावीरप्रसादजी जैन 'डबरा' थे। शिविर में लगभग 500-600 लोगों ने धर्मलाभ लिया।

विधि-विधान के संपूर्ण कार्य ब्र. अभिनन्दनजी शास्त्री एवं पण्डित संजयजी शास्त्री मंगलायतन के निर्देशन में पूर्ण हुये।

युवा/बाल व्यक्तित्व विकास शिविर संपन्न

उदयपुर (राज.) : यहाँ आदर्श नगर गायरियावास में श्री कुन्दकुन्द कहान वीतराग-विज्ञान शिक्षण समिति एवं अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन उदयपुर के संयुक्त तत्त्वावधान में दिनांक 10 से 17 जून तक युवा/बाल व्यक्तित्व विकास शिविर का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर पण्डित राजकुमारजी शास्त्री बांसवाड़ा, पण्डित अजितजी शास्त्री अलवर, पण्डित प्रकाशचंदजी छाबड़ा इन्दौर, डॉ. महावीरप्रसादजी शास्त्री उदयपुर, पण्डित खेमचंदजी शास्त्री उदयपुर, पण्डित मनीषजी शास्त्री रहली एवं पण्डित निलयजी शास्त्री आगरा द्वारा प्रवचनों एवं प्रौढकक्षा का लाभ मिला। बाल कक्षाओं में पण्डित ऋषभजी शास्त्री अमरकोट, पण्डित निलयजी शास्त्री, पण्डित नीलेशजी शास्त्री बांसवाड़ा, पण्डित आशीषजी शास्त्री टीकमगढ, पण्डित गजेन्द्रजी शास्त्री, पण्डित प्रक्षालजी शास्त्री, पण्डित तपिशजी शास्त्री, पण्डित जयेशजी शास्त्री, पण्डित मयंकजी शास्त्री, पण्डित मेघवीरजी शास्त्री, पण्डित प्रशान्तजी शास्त्री, पण्डित अभिषेकजी शास्त्री आदि विद्वानों का सहयोग प्राप्त हुआ। कक्षाओं का संचालन डॉ. महावीरजी शास्त्री द्वारा किया गया।

शिविर में 170 तीर्थंकर विधान का भी आयोजन किया गया। विधि-विधान के संपूर्ण कार्य पण्डित अजितजी शास्त्री अलवर द्वारा संपन्न हुये।

निर्देशक पण्डित राजकुमारजी शास्त्री एवं पण्डित जिनेन्द्रजी शास्त्री थे। संयोजक डॉ. महावीरप्रसादजी शास्त्री थे। **- कन्हैयालाल दलावत**

हार्दिक बधाई !

1. टोडरमल महाविद्यालय के स्नातक खड़ैरी (म.प्र.) निवासी **चि. चैतन्य शास्त्री** का शुभ विवाह बिलाई (म.प्र.) निवासी **सौ. पिंकी जैन** के साथ दिनांक 30 मई को संपन्न हुआ। इस उपलक्ष्य में वीतराग-विज्ञान हेतु 100/- रुपये प्राप्त हुये।

2. चि. सौम्य एवं सौ. ईशा तथा चि. श्रेय एवं सौ. महक के विवाहोपलक्ष्य में श्री आनन्दकुमारजी अजमेरा परिवार रतलाम की ओर से वीतराग-विज्ञान हेतु 1100/- रुपये की राशि प्राप्त हुई।

टोडरमल महाविद्यालय एवं वीतराग-विज्ञान परिवार की ओर से हार्दिक बधाई !

जयपुर शिविर का हार्दिक आमंत्रण

दिनांक 21 से 30 अक्टूबर 2012 तक पण्डित टोडरमल सर्वोदय ट्रस्ट द्वारा 15वाँ आध्यात्मिक शिक्षण शिविर श्री टोडरमल स्मारक भवन में आयोजित होने जा रहा है। आप सभी को पधारने हेतु हार्दिक आमंत्रण।

जो महानुभाव शिविर का लाभ लेने हेतु जयपुर पधार रहे हैं, वे अपने आगमन की पूर्व सूचना जयपुर कार्यालय को अवश्य भेजें, ताकि आवास व भोजन की समुचित व्यवस्था की जा सके।

35 वाँ आध्यात्मिक शिक्षण शिविर संपन्न

जयपुर (राज.) : यहाँ श्री टोडरमल स्मारक भवन में 'श्री कुन्दकुन्द कहान दिगम्बर जैन तीर्थ सुरक्षा ट्रस्ट' मुम्बई द्वारा संस्थापित एवं अनेक संस्थाओं द्वारा संचालित 'श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धांत महाविद्यालय, जयपुर' द्वारा दिनांक 22 से 31 जुलाई 2012 तक 35वाँ आध्यात्मिक शिक्षण शिविर का भव्य आयोजन किया गया।

शिक्षण शिविर का उद्घाटन श्री दिलीपजी बेलजी शाह मुम्बई के करकमलों से हुआ। इस अवसर पर सभा की अध्यक्षता श्री निहालचंदजी ओसवाल जयपुर ने की। मुख्य अतिथि के रूप में श्री प्रेमचंदजी बजाज कोटा एवं डॉ. भारिल्ल के साथ-साथ सभी विद्वत्गण मंचासीन थे।

शिक्षण शिविर में प्रतिदिन गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के मांगलिक सी.डी. प्रवचन के साथ-साथ डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल के समयसार, डॉ. उत्तमचंदजी सिवनी के प्रात:काल समयसार एवं रात्रि में मोक्षमार्गप्रकाशक पर प्रवचनों का लाभ प्राप्त हुआ। रात्रि में प्रथम प्रवचन में ब्र. जतीशचंदजी शास्त्री दिल्ली, पण्डित प्रदीपजी झांझरी उज्जैन, पण्डित राजेन्द्रकुमारजी जबलपुर, पण्डित शैलेषभाई तलोद, पण्डित अनिलजी शास्त्री भिण्ड आदि के प्रवचनों का लाभ प्राप्त हुआ।

प्रतिदिन चलने वाली प्रौढ कक्षाओं में पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल जयपुर द्वारा क्रमबद्धपर्याय, पण्डित प्रदीपजी झांझरी उज्जैन द्वारा परमार्थवचनिका, ब्र. जतीशचंदजी शास्त्री दिल्ली द्वारा छहढाला, पण्डित शांतिकुमारजी पाटील जयपुर द्वारा समयसार, पण्डित संजीवजी गोधा जयपुर द्वारा नयों का सामान्य स्वरूप, पण्डित विकासजी छाबड़ा इन्दौर द्वारा तत्त्वार्थसूत्र की कक्षा ली गई। सायंकाल ब्र. यशपालजी जैन ने गुणस्थान विवेचन की कक्षा ली।

दोपहर की सभा में प्रतिदिन बाबू जुगलकिशोरजी 'युगल' के सी.डी. प्रवचन के पश्चात् महाविद्यालय के छात्र विद्वानों द्वारा प्रवचन तदुपरान्त आयोजित व्याख्यानमाला में पण्डित राजेन्द्रकुमारजी जबलपुर, पण्डित शिखरचंदजी विदिशा, पण्डित गुलाबचंदजी बीना, पण्डित रमेशजी शास्त्री 'दाऊ', पण्डित दिलीपजी बाकलीवाल इन्दौर, पण्डित शैलेषभाई तलोद, पण्डित शिखरचंदजी विदिशा आदि विद्वानों के प्रवचनों का लाभ प्राप्त हुआ।

प्रात:कालीन प्रौढ कक्षाओं में पण्डित कमलचंदजी पिड़ावा, पण्डित दीपकजी वैद्य जयपुर, ब्र. जतीशभाई दिल्ली, पण्डित राजेन्द्रकुमारजी जबलपुर, पण्डित सुनीलजी 'धवल' भोपाल, पण्डित विकासजी छाबड़ा इन्दौर इत्यादि विद्वानों के प्रवचनों का लाभ प्राप्त हुआ। इसके उपरान्त 6.30 बजे से 7.00 बजे तक जी-जागरण पर आने वाले समयसार ग्रन्थ पर डॉ. भारिल्ल के प्रवचनों का लाभ मिला।

35वें शिक्षण शिविर के आमंत्रणकर्ता श्रीमती कनकबेन अनंतराय सेठ परिवार विले पार्लेमुम्बई, स्व. श्री गुलाबचंदजी कासलीवाल मुम्बई की स्मृति में शुभहस्ते कासलीवाल परिवार मुम्बई, श्रीमती सुनीता शांतिनाथ जैन पूना की स्मृति में शुभहस्ते शांतिनाथ व अजितकुमारजी जैन पूना-बड़ौदा, श्री प्रेमचंद सुपुत्र तन्मय-ध्याता बजाज कोटा एवं श्री नवीनचंद केशवलालजी मेहता मुम्बई रहे।

इस अवसर पर श्री 20 तीर्थंकर निर्वाण विधान का आयोजन किया गया, जिसके

आयोजनकर्ता पण्डित शिखरचंदजी विदिशा, श्री गुलाबचंदजी जैन बीना, श्री केशव सुधांशुजी जैन करावली, श्री रमण मोतीचंदजी दोशी तलोद, श्री नरेन्द्रकुमारजी बड़जात्या जयपुर एवं श्री भभूतमलजी भंडारी बैंगलोर थे।

शिविर के अवसर पर डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल के समयसार के आस्रव अधिकार, पुण्य-पाप अधिकार एवं संवर अधिकार पर हुये वीडियो प्रवचनों की डी.वी.डी. तथा जयपुर पंचकल्याणक की 20 डी.वी.डी. का विमोचन हुआ।

विधि-विधान के समस्त कार्य पण्डित सुनीलजी भोपाल, पण्डित कांतिकुमारजी इन्दौर, पण्डित रमेशचंदजी इन्दौर एवं कमलचंदजी गुना ने संपन्न कराये।

शिक्षण शिविर के समस्त कार्यक्रम ब्र. जतीशचंदजी शास्त्री, श्री अशोकजी जबलपुर एवं पण्डित पूनमचंदजी छाबड़ा के निर्देशन में संपन्न हुये।

सलाहकार समिति का अधिवेशन संपन्न

जयपुर (राज.): यहाँ श्री टोडरमल स्मारक भवन में चल रहे शिक्षण शिविर के अन्तर्गत दिनांक 29 जुलाई को श्री कुन्दकुन्द कहान दि. जैन तीर्थसुरक्षा ट्रस्ट सलाहकार समिति का अधिवेशन रखा गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री सुमनभाई दोशी राजकोट ने की। मुख्य अतिथि के रूप में श्री प्रदीपजी चौधरी किशनगढ तथा विशिष्ट अतिथि के रूप में डॉ. अरविन्दजी दोशी गोंडल, श्री हर्षवर्धनजी औरंगाबाद, श्री सुभाषचंद वकीलचंदजी नांगलोई दिल्ली, श्री विजयजी बड़जात्या इन्दौर, श्री पदमजी पहाड़िया इन्दौर, पण्डित शिखरचंदजी विदिशा, श्री नरेशजी लुहाड़िया दिल्ली उपस्थित थे। अधिवेशन के उद्घाटनकर्त्ता श्री रमेशभाई दोशी थे।

कार्यक्रम का मंगलाचरण कु.परिणति पाटील जयपुर ने किया एवं संचालन करते हुये ब्र. जतीशचंदजी शास्त्री दिल्ली ने ट्रस्ट की गतिविधियों का परिचय दिया।

इस अवसर पर विद्वानों के अन्तर्गत डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल, पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल जयपुर, डॉ. उत्तमचंदजी सिवनी, पण्डित राजेन्द्रकुमारजी जबलपुर, पण्डित प्रदीपकुमारजी झांझरी उज्जैन, पण्डित शांतिकुमारजी पाटील जयपुर, पण्डित संजीवकुमारजी गोधा जयपुर आदि महानुभाव मंचासीन थे।

कार्यक्रम में तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल ने अपने उद्बोधन में तीर्थराज सम्मेदशिखर में होने वाले पंचकल्याणक में आने का आमंत्रण देते हुये कहा कि यह सम्पूर्ण मुमुक्षु समाज का आयोजन है, इसे सफल बनाने की जिम्मेवारी हम सबकी है।

ट्रस्ट के महामंत्री श्री बसंतभाई दोशी मुम्बई ने सम्मेदशिखर, गिरनारजी आदि सिद्धक्षेत्रों के बारे में कानूनी रिपोर्ट प्रस्तुत की। पंचकल्याणक की आवास व्यवस्था की जानकारी श्री विजयजी बड़जात्या व श्री पदमजी पहाड़िया इन्दौर ने एवं भोजन सम्बन्धी जानकारी श्री कन्हैयालालजी दलावत उदयपुर ने दी।

इस अवसर पर पण्डित शिखरचंदजी विदिशा ने कहा कि भविष्य में इन बालकों को ही तत्त्वप्रचार का झण्डा पकड़ना है; अत: इनमें जैन सिद्धांतों का बीजारोपण अत्यंत आवश्यक है। इनके अतिरिक्त पण्डित गुलाबचंदजी बीना, पण्डित श्रेणिकजी जबलपुर, पण्डित धनसिंहजी ज्ञायक पिड़ावा, श्री प्रदीपजी चौधरी किशनगढ आदि ने भी अपने विचार व्यक्त किये।

दशलक्षण महापर्व में धर्म प्रभावनार्थ कहाँ-कौन ?

पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट द्वारा प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी दिनांक 19 सितम्बर 2012 से प्रारम्भ हो रहे दशलक्षण महापर्व में समाज के आमंत्रण पर तत्त्वप्रचारार्थ विद्वान भेजे जा रहे हैं। पर्व के प्रारंभ होने में लगभग 27 दिन का समय शेष है, तथापि दिनांक 21 अगस्त 2012 तक हमारे पास 470 स्थानों से आमंत्रण प्राप्त हो चुके हैं और अभी भी अनेक स्थानों से आमंत्रण प्राप्त हो रहे हैं। दिनांक 21 अगस्त 2012 तक लिये गये निर्णयानुसार अब तक लगभग 446 स्थानों पर ही विद्वान निश्चित हो सके हैं; शेष स्थानों पर विद्वान निश्चित करना बाकी है। अभी तक तैयार सूची यहाँ प्रकाशित की जा रही है ह्न

विशिष्ट विद्वानों में – 1. बाबू जुगलकिशोरजी 'युगल' : कोटा, **2. डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल :** नागपुर, **3. पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल :** विदिशा (किला अन्दर), **4. पण्डित डॉ. उत्तमचन्दजी जैन सिवनी :** राजकोट, **5. ब्र. यशपालजी जैन :** सिलवानी, **6. पण्डित ज्ञानचन्दजी जैन :** सोनागिर, **7. ब्र. सुमतप्रकाशजी जैन :** दादर-मुम्बई, **8. पण्डित विमलचंदजी झांझरी :** जयपुर (आदर्शनगर), **9. ब्र. जतीशचन्दजी शास्त्री सनावद :** नई दिल्ली, **10. ब्र. अभिनन्दनजी शास्त्री :** भागलपुर, **11. पण्डित राजेन्द्रकुमारजी जबलपुर :** इन्दौर (साधनानगर), **12. पण्डित अभयकुमारजी देवलाली :** बड़ौदा, **13. पण्डित पूनमचन्दजी छाबड़ा :** जयपुर, **14. ब्र. हेमचन्दजी 'हेम' देवलाली :** अजमेर (वी.वि. भवन), **15. पण्डित कपूरचन्दजी 'कौशल' भोपाल :** इन्दौर (लश्करी मंदिर), **16. पण्डित शांतिकुमारजी पाटील जयपुर :** खुरई, **17. पण्डित प्रदीपजी झांझरी :** देवलाली, **18. पण्डित वीरेन्द्रकुमारजी जैन आगरा :** भीलवाड़ा, **19. पण्डित शैलेशभाई शाह तलौद :** तलौद, **20.पण्डित राकेशजी शास्त्री नागपुर :** दिल्ली (विश्वासनगर), **21.पण्डित संजीवकुमारजी गोधा जयपुर :** अहमदाबाद (नवरंगपुरा), **22. पण्डित अशोकजी लुहाड़िया मंगलायतन :** अलीगढ़, **23. पण्डित दिनेशभाई शहा :** मुम्बई, **24. वि. उज्ज्वला शहा :** मुम्बई, **25. पण्डित सुनीलजी जैनापुरे :** राजकोट, **26. पण्डित अनिलकुमार शास्त्री भिण्ड :** बड़नगर, **27. ब्र. कैलाशचन्द्रजी अचल :** कारंजा, **28.डॉ. दीपक जैन शास्त्री जयपुर :** मंगलायतन।

विदेश में – पण्डित ज्ञायक शास्त्री मुम्बई : नैरोबी (अफ्रीका)।

मध्यप्रदेश प्रान्त

1. **विदिशा (किला अन्दर) :** पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल जयपुर, 2. **बड़नगर :** पण्डित अनिलजी भिण्ड, 3. **सिलवानी :** ब्र. यशपालजी जैन जयपुर, 4. **खुरई :** पण्डित शान्तिकुमार पाटील जयपुर, 5. **अशोकनगर :** पण्डित ऋषभकुमारजी इंजी. इन्दौर, 6. **जबलपुर (बड़ा फुहारा) :** विदुषी ब्र. कल्पनाबेन सागर, 7.**इन्दौर (साधनानगर) :** पण्डित राजेन्द्रकुमारजी जैन जबलपुर, 8. **भोपाल (कोहेफिजा) :** पण्डित सुदीपकुमारजी इंजी. बीना, 9. **बीना :** पण्डित विक्रांतजी शास्त्री सोलापुर, 10. **रतलाम (आदिनाथ चैत्यालय) :** ब्र. सुनीलजी शिवपुरी, 11. **इन्दौर (पलासिया) :** पण्डित सुबोधजी सिवनी, 12. **उज्जैन :** पण्डित श्रेणिक जैन जबलपुर, 13. **गुना (वीतराग-विज्ञान) :** पण्डित रीतेश शास्त्री डडूका, 14. **भोपाल (चौक) :** श्री मनोजकुमारजी जबलपुर, 15. **भिण्ड (महावीर चौक) :** पण्डित नीतेश शास्त्री आरोन, 16. **टीकमगढ़ :** पण्डित प्रतीक शास्त्री जबलपुर, 17. **बदरवास :** पण्डित नीतेश शास्त्री कोटा, 18. **गढ़ाकोटा :** पण्डित विवेक शास्त्री कोटा, 19. **सागर (महावीर जिनालय) :** ब्र. बासन्ती बेन देवलाली, 20. **कोलारस (चौधरी मोहल्ला) :** पण्डित अनुराग शास्त्री वापी, 21. **ग्वालियर (सोडा का कुआँ) :** पण्डित आशीषजी शास्त्री टीकमगढ 22. **इन्दौर (रामाशा मन्दिर) :** पण्डित विपिनजी शास्त्री मुम्बई, 23. **भोपाल (कस्तूरबानगर) :** पण्डित सतीशचंदजी जैन पिपरई, 24. **बेगमगंज :** पण्डित विनोदकुमारजी जैन गुना, 25. **केसली :** विदुषी पुष्पा जैन खंडवा, 26. **जावरा :** पण्डित सुनीलकुमारजी शास्त्री प्रतापगढ़, 27. **भिण्ड (देवनगर) :** पण्डित नेमीचन्दजी जैन ग्वालियर, 28. **बण्डा :** पण्डित हुकमचन्दजी सिंघई, राघौगढ़ 29. **चन्देरी :** पण्डित कैलाशचन्दजी, महरौनी 30. **अम्बाह :** पण्डित प्रमोद शास्त्री, टामटिया 31. **जबेरा :** पण्डित नागेशजी, पिड़ावा 32. **करेरा :** पण्डित नितिनजी शास्त्री झालरापाटन, 33. **शहडोल :** पण्डित राहुलजी जैन, रानीपुर 34. **शाहगढ़ :** पण्डित नन्दकिशोरजी गोयल, विदिशा, 35. **सागर (तारण-तरण) :** डॉ. राजेश शास्त्री, विदिशा, 36. **शिवपुरी (शान्तिनाथ मन्दिर) :** पण्डित राजेन्द्रकुमारजी जैन, मुरैना 37. **शिवपुरी (परमागम मन्दिर) :** पण्डित आशीष शास्त्री, भिण्ड, 38. **अभाना :** पण्डित रजतकांत शास्त्री, जयपुर 39. **इन्दौर (गांधीनगर) :** पण्डित अरुणजी मोदी, सागर 40. **मन्दसौर (गोल चौराहा) :** डॉ. नरेन्द्रकुमारजी शास्त्री, जयपुर 41. **मगरौन :** पण्डित शेषकुमारजी, उभेगांव 42. **बनखेड़ी :** पण्डित सचिनजी शास्त्री जयपुर, 43. **गुना (बाजार मन्दिर) :** पण्डित अमितजी शास्त्री भोपाल 44. **मन्दसौर (कालाखेत) :** पण्डित सुनीलजी शास्त्री नाके, निम्बाहेड़ा 45. **चन्दला :** पण्डित मयंक शास्त्री भिण्ड, जयपुर 46. **हरदा :** विदुषी कुसुमलताजी जैन 47. **सिरोंज :** पण्डित नियमजी शास्त्री जयपुर 48. **शुजालपुर मण्डी :** पण्डित कैलाशचंदजी, अशोकनगर 49. **शहापुर (बुरहानपुर) :** पण्डित अनुराज शास्त्री, फिरोजाबाद 50. **गौरझामर :** विदुषी ब्र. विमलाबेन जयपुर 51. **रांझी (जबलपुर) :** पण्डित राजेश शेठ, मुम्बई 52. **कुचड़ौद :** पण्डित आशीष महाजन शास्त्री, जयपुर 53. **आरोन :** पण्डित प्रकाशचंदजी झांझरी, उज्जैन 54. **निसईजी (मल्हारगढ़) :** पण्डित कपूरचन्दजी भायजी, सागर 55. **निसईजी (मल्हारगढ़) :** पण्डित रतनलालजी, होशंगाबाद 56. **मकरोनिया (सागर) :** पण्डित महेन्द्रकुमारजी शास्त्री, भिण्ड 57. **बड़गाँव (कटनी) :** पण्डित प्रमोद शास्त्री, कोटा 58. **शहापुर भिटोनी :** पण्डित संतोषजी वैध, खनियांधाना 59. **नागदा जंक्शन :** पण्डित प्रीतिंकर शास्त्री, जयपुर 60. **सिवनी :** पण्डित

महेशचन्दजी, ग्वालियर 61. **महिदपुर :** पण्डित चेतन शास्त्री गोरमी, जयपुर 62. **आकाझिरी :** पण्डित विनोदजी मोदी, दलपतपुर 63. **बेडिया :** पण्डित राजेन्द्रकुमारजी, पिपरई 64. **कोलारस (आदिनाथ) :** पण्डित अखिलेश शास्त्री, सागर 65. **धर्मपुरी :** पण्डित दिनेशजी शास्त्री जयपुर 66. **अमायन :** पण्डित नवीनजी शास्त्री, जयपुर 67. **इन्दौर (विजयनगर) :** पण्डित चितरंजनजी, छिंदवाड़ा 68. **इन्दौर (नरसिंगपुरा) :** पण्डित गौरव शास्त्री, चन्देरी 69. **दलपतपुर :** विदुषी नयना शास्त्री, खनियांधाना 70. **रहली :** पण्डित राकेश शास्त्री, लिधौरा 71. **ग्वालियर (थाठीपुर) :** पण्डित नरेन्द्रकुमारजी, जबलपुर 72. **विदिशा (अरिहंतविहार) :** ब्र. सुधाबेन उभेगाँव, छिंदवाड़ा 73. **इन्दौर (टोडा की गोठ) :** पण्डित कमलकुमारजी जबेरा 74. **कटनी :** पण्डित दिलीपजी बाकलीवाल, इन्दौर, 75. **धार :** पण्डित लालारामजी एडवोकेट, अशोकनगर 76. **परासिया :** पण्डित अभिषेक जैन, उभेगाँव 77. **इन्दौर (लश्करी बाजार) :** पण्डित कपूरचन्दजी कौशल, भोपाल 78. **सिंगोली :** पण्डित ज्ञानचन्दजी जैन, झालावाड़ 79. **सिंगोडी :** पण्डित मनोजजी शास्त्री, करेली 80. **फोपनार :** पण्डित सुदीप शास्त्री, घाटोल 81. **राधौगढ :** ब्र. अमितकुमारजी विदिशा 82. **पंधाना :** श्रीमती लता रोम, अकोला 83. **पथरिया :** पण्डित मुरारीलालजी, नरवर 84. **गुना (महावीर जिनालय) :** पण्डित मधुकरजी जलगांव 85. **अथाईखेड़ा (अशोकनगर) :** पण्डित राहुल शास्त्री, जयपुर 86. **इन्दौर (रामचन्द्र नगर) :** पण्डित अनिलजी इंजी., भोपाल 87. **निसईजी (मल्हारगढ़) :** विदुषी पुष्पाबहन, हौशंगाबाद 88. **निसईजी (मल्हागढ़) :** पण्डित अनुभव शास्त्री, जयपुर 89. **जबलपुर (तारण-तरण) :** पण्डित ज्ञायक शास्त्री, सिलवानी 90. **करेली :** पण्डित निर्मलकुमारजी जैन एड., एटा 91. **निवाड़ी (टीकमगढ़) :** पण्डित सुमित शास्त्री, भिण्ड जयपुर 92. **घुवारा :** पण्डित समर्पण शास्त्री, जयपुर 93. **मालनपुर :** पण्डित अंकुर शास्त्री, मडदेवरा 94. **इन्दौर (राजेन्द्रनगर) :** पण्डित रविकुमारजी, विदिशा 95. **भोपाल (सोनागिरी) :** पण्डित सुशीलकुमारजी शास्त्री 96. **भोपाल (अशोका गार्डन) :** पण्डित अंकुर शास्त्री, देहगांव 97. **ग्वालियर (फाल्के बाजार) :** पण्डित निखिल शास्त्री, कोतमा 98. **इन्दौर (कालानी नगर) :** पण्डित पद्मचन्दजी गंगवाल, इन्दौर 99. **खुरई :** विदुषी प्रतीति शास्त्री, जयपुर 100. **चान्दा मेटा :** पण्डित बाहुबली शास्त्री, जयपुर 101. **टिमरणी :** पण्डित दर्शित शास्त्री, जयपुर 102. **गंधवानी (धार) :** पण्डित दीपकजी शास्त्री, मडदेवरा 103. **विजयपुर (गुना) :** पण्डित पंकज शास्त्री, खडेरी 104. **ग्वालियर (लोहा मंडी) :** पण्डित सुनीलजी शास्त्री, मुरार **105. मक्सी :** पण्डित सौरभजी शास्त्री कोलारस जयपुर **106. अमलाई :** पण्डित जिनेशजी शास्त्री जयपुर **107. विदिशा (किला अन्दर) :** पण्डित सर्वज्ञजी शास्त्री भारिल्ल जयपुर, **108. सोनागिर :** पण्डित रमेशचंदजी लवाण जयपुर, 109.**गुना :** पण्डित अनिलकुमारजी शास्त्री खनियांधाना, 110. **ग्वालियर :** पण्डित अरविन्दजी शास्त्री गुरसौरा 111. **राघौगढ :** पण्डित अशोकजी मांगुलकर कारंजा, 112. **इन्दौर :** पण्डित अशोकजी शास्त्री रायपुर, 113. **दमोह :** पण्डित प्रदीपकुमारजी शास्त्री, 114. **द्रोणगिरी :** पण्डित पंकजजी शास्त्री हीरापुर 115. **सनावद :** पण्डित रीतेशजी शास्त्री 116. 117. **बेरसिया :** पण्डित जीवनजी शास्त्री घुवारा एवं पण्डित

सरदारमलजी जैन, 118. **इन्दौर :** पण्डित सतीशजी कासलीवाल देवास, 119. **सोनागिर :** पण्डित लालजीरामजी विदिशा, 120. **भोपाल :** पण्डित सचिनजी शास्त्री बरेली, 121. **बीना :** पण्डित अमितजी शास्त्री जबेरा, 122. **दलपतपुर :** पण्डित निकलेशजी शास्त्री, 123.124. **भोपाल :** पण्डित राहुलजी शास्त्री नौगामा एवं पण्डित एकत्वजी शास्त्री खनियांधाना, 125. **ग्वालियर (पच्चीपाडा) :** पण्डित धनेन्द्रजी शास्त्री सिंघल, 126. **विदिशा (सीमंधर जिनालय) :** पण्डित चिन्मयजी शास्त्री बडकुल, 127. **सोनागिर :** डॉ. मुकेशजी शास्त्री विदिशा, 128.129. **लुकवासा :** पण्डित सुकुमालजी शास्त्री एवं पण्डित अमितजी शास्त्री, 130. **चन्देरी (आदीश्वरम्) :** पण्डित अखिलजी बंसल जयपुर।

महाराष्ट्र प्रान्त

1. **नागपुर (इतवारी) :** डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल, जयपुर 2. **मुम्बई (दादर) :** ब्र. सुमतप्रकाशजी, खनियाँधाना 3. **मुम्बई (सीमंधर जिनालय) :** पण्डित विपिनजी शास्त्री, नागपुर 4. **मुम्बई (बोरीवली) :** पण्डित अश्विनभाई शाह, मलाड़ 5. **मुम्बई (घाटकोपर) :** पण्डित नन्दकिशोरजी शास्त्री, काटोल 6. **मुम्बई (भायंदर) वेस्ट :** पण्डित अनुभव शास्त्री, कानपुर 7. **मुम्बई (मलाड) :** पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री, खैरागढ़ 8. **मुम्बई (दहीसर) :** विदुषी अनुप्रेक्षा शास्त्री, मुम्बई 9. **मुम्बई (भूलेश्वर) :** पण्डित रमेशचंदजी बांझल इन्दौर 10. **मुम्बई (चेम्बूर) :** पण्डित सुमेरजी बेलोकर 11. **गजपंथा :** पण्डित अनिलजी धवल 12. **पुणे (सांगवी) :** पण्डित फूलचन्दजी मुक्किरवार, हिंगोली 13. **जलगांव :** पण्डित बाबूभाई मेहता, फतेपुर 14. **हिंगाली :** पण्डित संजयजी सेठी शास्त्री, जयपुर 15. **मलकापुर :** पण्डित आकेश जैन छिंदवाडा 16. **वाशिम (जवाहर कालोनी) :** पण्डित विरागजी शास्त्री, जबलपुर 17. **कारंजा (लाड) :** ब्र. कैलाशचन्दजी अचल, ललितपुर 18. **सेनगाँव :** पण्डित श्रुतेशजी शास्त्री नागपुर 19. **मुम्बई (एवरशाईनगर) :** पण्डित मनीष शास्त्री, इन्दौर 20. **देवलाली :** पण्डित प्रदीपकुमारजी झांझरी, उज्जैन 21. **सेलू :** पण्डित विवेक शास्त्री, पिड़ावा 22. **शिरडशहापुर :** पण्डित प्रशांत काले शास्त्री, राजुरा 23. **चिखली :** पण्डित शुभम् शास्त्री, झालरापाटन, जयपुर 24. **साडवली :** पण्डित करण दिगम्बरे बांसवाडा 25. **औरंगाबाद (सिडको) :** पण्डित दीपेश शास्त्री, अमरमऊ 26. **मालशिरस :** पण्डित अभिनय शास्त्री, कोटा 27. **पुणे (चिंचवड़) :** पण्डित जितेंद्र राठी, नागपुर 28. **वरूड :** पण्डित गौरव शास्त्री, कोटा 29. **डासाला :** पण्डित अभय शास्त्री, जयपुर 30. **रिसोड :** पण्डित कुलभूषण शास्त्री, जयपुर 31. **वर्धा :** पण्डित अभिजीत अलगोडर शास्त्री, मैसूर 32. **मालेगाँव :** पण्डित अनिरुद्ध शास्त्री, कोटा 33. **वसमतनगर :** पण्डित जयेश रोकड़े शास्त्री, मालेगाँव 34. **बेलोरा :** पण्डित शान्तिकुमार जैन, कलमनूरी 35. **वाशिम (सैतवाल मन्दिर) :** पण्डित प्रदीप धोतरे ध्रुवधाम बांसवाडा 36. **औरंगाबाद :** पण्डित विवेकजी, छिन्दवाड़ा 37. **नातेपुते :** पण्डित प्रद्युम्नकुमारजी, मुजफ्फर नगर 38. **मुम्बई (वसई) :** पण्डित सौरभ शास्त्री, शहपुरा 39. **विहीगाँव :** पण्डित शुभम हातगणे जयपुर 40. **गजपंथा :** पण्डित सुरेन्द्रकुमारजी, उज्जैन 41. **नातेपुते :** पण्डित शीतल रायचन्द दोशी 42. **सदाशिवनगर :** पण्डित राहुल शास्त्री, कोटा 43. **देवलाली :**

पण्डित दीपक धवल, भोपाल 44. **आर्वी (वर्धा) :** पण्डित बांकेबिहारी शास्त्री, पोन्नूर 45. **अकोला :** पण्डित सुनीलजी देवरी 46. **रामटेक :** पण्डित रूपेन्द्र शास्त्री, छिन्दवाड़ा 47. **नागपुर :** डॉ. मनीष शास्त्री, खतौली 48. **मुम्बई (मलाड) :** पण्डित अभिनय शास्त्री, जबलपुर 49. **नागपुर (विधान) :** पण्डित मयंक शास्त्री, अमरमऊ जयपुर, **50. कारंजा (गुरुकुल) :** पण्डित आलोकजी शास्त्री जालना, **51. कारंजा (वीरवाडी) :** पण्डित चिन्तामणजी शास्त्री औरंगाबाद, **52. सेलू :** पण्डित अशोकजी शास्त्री वानरे, **53. सेलू :** पण्डित अनंतजी शास्त्री शिरपुर, **54. हिंगोली :** पण्डित अमोलजी संघई शास्त्री, **55. सेनगांव :** पण्डित किरणकुमारजी शास्त्री उखलकर, **56. दानोली :** पण्डित किरणजी शास्त्री पाटील, **57. बाहुबली :** डॉ. नेमिनाथजी शास्त्री बालीकाई, **58. सांगली :** पण्डित प्रसन्नजी शास्त्री कोल्हापुर, **59. एलोरा :** पण्डित गुलाबचंदजी शास्त्री गोवर्धन, **60. एलोरा :** पण्डित प्रदीपकुमारजी शास्त्री, **61. जिन्तूर :** पण्डित प्रदीपजी शास्त्री महाजन, **62. सोलापुर :** पण्डित प्रशान्तजी मोहरे शास्त्री, **63. सोलापुर :** पण्डित रवीन्द्रजी शास्त्री कारंजा, **64. मुम्बई :** पण्डित हितेशजी शास्त्री चिंचोली, **65.66. मुम्बई :** पण्डित दिनेशभाई शहा, डॉ. उज्ज्वलाबेन शहा, **67. मुम्बई :** पण्डित आदित्यजी शास्त्री खुरई, **68. मुम्बई :** पण्डित किशोरजी शास्त्री धोंगडे, 69.70.71. **मुम्बई :** पण्डित अध्यात्मप्रकाशजी भारिल्ल, पण्डित परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल व पण्डित अनेकान्तजी भारिल्ल शास्त्री, 72. **हिंगोली :** पण्डित मुकुन्दजी शास्त्री वसमतनगर हिंगोली, 73. **राधानगरी :** पण्डित महेशजी शास्त्री नेजे, 74.75. **जिंतूर :** पण्डित नरेन्द्रकुमारजी वानरे शास्त्री एवं पण्डित प्रदीपजी महाजने सेनगांव, 76. **मुम्बई (विक्रोली) :** पण्डित अनन्तकुमारजी शास्त्री करावली, 77. **नागपुर :** पण्डित मनीषजी सिद्धांत खडैरी।

राजस्थान प्रान्त

1. **कोटा :** बाबू जुगल किशोरजी 'युगल' 2. **कोटा (रामपुरा) :** पण्डित सचिन अकलूजवाले, खनियाँधाना 3. **कोटा (इन्द्र विहार) :** पण्डित संजयजी पुजारी इंजी. खनियाँधाना 4. **अलवर (मु. मंडल) :** पण्डित जयकुमारजी जैन, बारावाले, कोटा 5. **पिडावा :** पण्डित जयेश शास्त्री उदयपुर 6. **अजमेर (वी.विज्ञान भवन) :** ब्र. हेमचन्दजी 'हेम', देवलाली 7. **उदयपुर (मु. मंडल) :** पण्डित देवेन्द्रकुमारजी, बिजौलिया 8. **उदयपुर (सेक्टर-11) :** ब्र. नन्है भैया, सागर 9. **उदयपुर (नेमीनगर) :** डॉ. नेमचन्दजी, दिल्ली 10. **उदयपुर (गायरीयावास) :** पण्डित ऋषभकुमारजी शास्त्री अमरकोट 11. **बून्दी (मलाह शाहजी का मन्दिर) :** पण्डित शौर्य शास्त्री, मण्डाना 12.13. **जयपुर (आदर्शनगर) :** पण्डित विमलचंदजी झांझरी, उज्जैन एवं विदुषी ब्र. समता झांझरी, उज्जैन 14. **अलवर (शिवाजी पार्क) :** पण्डित प्रेमचन्दजी शास्त्री 15. **भरतपुर :** पण्डित गजेन्द्रजी शास्त्री, मौ 16. **भीलवाड़ा :** पण्डित वीरेन्द्रकुमारजी, आगरा 17. **कानोड :** पण्डित नील शास्त्री, जयपुर 18. **किशनगढ़ :** पण्डित विवेक शास्त्री, अमरमऊ जयपुर 19. **अलीगढ़ :** पण्डित विमलचन्दजी जैन, लाखेरी 20. **भीण्डर :** पण्डित सन्दीप शास्त्री, शहपुरा 21. **सेमारी :** पण्डित निलय शास्त्री, जयपुर 22. **कुरावड़ :** पण्डित प्रतीक शाह शास्त्री, जयपुर

23. **प्रतापगढ़ (मुमुक्षु मंडल) :** पण्डित अनुपम शास्त्री, जयपुर 24. **कुशलगढ़ (तेरापंथी) :** पण्डित धर्मचंदजी जैन जयथल 25. **बिजौलिया :** पण्डित कमलचंदजी जैन, पिडावा 26. **पीसांगन :** ब्र. सुकुमाल झांझरी, उज्जैन 27. **जयथल :** पण्डित जिनकुमार शास्त्री, जयपुर 28. **देवली (आदिनाथ) :** पण्डित संजय शास्त्री, खनियांधाना 29. **देवली (चन्द्रप्रभ) :** पण्डित विकास शास्त्री, मौ 30. **टोकर :** पण्डित नीशू शास्त्री, जयपुर 31. **साकरोदा :** पण्डित विवेक शास्त्री, गडेकर जयपुर 32. **लाम्बाखोह :** पण्डित सचिन शास्त्री, सागर जयपुर 33. **उदयपुर (सेक्टर-5) :** पण्डित सौरभ शास्त्री, गढ़ाकोटा, कोटा 34. **लकड़वास :** पण्डित श्रीपालजी जैन, घाटोल 35. **बोहेडा :** पण्डित प्रवीण शास्त्री, अमरमऊ जयपुर 36. **झालीजी का बराना :** पण्डित अखिलेश शास्त्री, जयपुर 37. **अजमेर (वैशालीनगर) :** पण्डित अश्विन शास्त्री, नौगामा 38. **अजमेर :** पण्डित रितेश जैन, पिड़ावा (कोटा) 39. **चित्तौड़गढ़ (कुम्भानगर) :** पण्डित हर्षित जैन शास्त्री, जयपुर 40. **वल्लभनगर :** पण्डित सुमित शास्त्री, जयपुर 41. **कून :** पण्डित आशीष शास्त्री, भिण्ड, जयपुर 42. **डबोक :** पण्डित रवि शास्त्री, जयपुर 43. **अलवर (मुमुक्षु मण्डल) :** पण्डित अमोल शास्त्री महाजन, जयपुर 44. **इटावा (कोटा) :** पण्डित प्रखर जैन शास्त्री, जयपुर 45. **उदयपुर (केशवनगर) :** पण्डित खेमचन्दजी शास्त्री, उदयपुर 46. **कुशलगढ़ (शान्तिनाथ) :** पण्डित भूषण शास्त्री, जयपुर 47. **वेर :** पण्डित पदमकुमारजी जैन, कोटा 48. **बेगू :** पण्डित नितिन शास्त्री, सूरत 49. **जयपुर (जयजवान कॉलोनी) :** पण्डित पीयूषजी शास्त्री छतरपुर 50. **कोटा (मुमुक्षु आश्रम) :** पण्डित शनि शास्त्री, खनियांधाना 51. **कोटा (छावनी) :** पण्डित प्रेमचन्दजी बजाज, कोटा 52. **कोटा (छावनी) :** पण्डित सचिन्द्र शास्त्री, गढ़ाकोटा 53. **जयपुर (टोडरमल स्मारक) :** पण्डित पूनमचंदजी छाबड़ा, 54. **जयपुर (बड़े दीवानजी का मंदिर) :** पण्डित सोनूजी शास्त्री जयपुर, 55. **जयपुर (मालवीय नगर सेक्टर-10) :** पण्डित विनयचंदजी पापड़ीवाल 56. **सांगानेर (अल्का नर्सिंग होम) :** डॉ. प्रभाकर सेठी 57. **जयपुर :** डॉ. भागचंदजी शास्त्री 58. **जयपुर :** पण्डित राजेशजी शास्त्री जयपुर 59. **जयपुर (महावीर उ.मा. विद्यालय) :** पण्डित संतोषजी शास्त्री बकस्वाहा, **60. अलवर :** डॉ. अरुणजी शास्त्री राजुरा, **61. अलवर :** पण्डित अजितकुमारजी शास्त्री फुटेरा, **62. दौसा :** पण्डित अध्यात्मप्रकाशजी शास्त्री कोलारस, **63. आनंदपुरी :** पण्डित दीपेशजी शास्त्री, **64. दौसा :** पण्डित प्रमोदकुमारजी शास्त्री टीकमगढ, **65. दूनी :** पण्डित पवनकुमारजी शास्त्री सोंरई, **66. गोविन्दगढ :** पण्डित प्रभातजी शास्त्री टीकमगढ, **67. जोधपुर :** पण्डित राजकमलजी शास्त्री परतापुर, **68. सांभरलेक :** पण्डित कृष्णचंदजी शास्त्री भिण्ड, **69. रावतभाटा :** पण्डित संजयजी शास्त्री हरसौरा, 70. **उदयपुर :** पण्डित गजेन्द्रजी शास्त्री भिण्डर, 71. **जयपुर :** पण्डित नीतेशजी शास्त्री डडूका 72. **जयपुर :** पण्डित नवीनकुमारजी शास्त्री फिरोजाबाद, 73. **विराटनगर :** पण्डित प्रमोदकुमारजी शास्त्री भिण्ड, 74. **जयपुर :** पण्डित परेशजी शास्त्री अरथुना, 75. **पारसोला :** पण्डित चिन्मयजी शास्त्री पिड़ावा, 76. **लाडनूं :** डॉ. योगेशकुमारजी शास्त्री बरा, 77. **उदयपुर (सेक्टर-14) :** पण्डित प्रक्षालजी शास्त्री, 78. **कुचामनसिटी :** पण्डित राजेशजी शास्त्री गुढा, 79. **झालरापाटन :** पण्डित विक्रांतजी

शास्त्री, 80. **जयपुर :** पण्डित अभिषेकजी शास्त्री कोलारस, 81. **जयपुर :** पण्डित जितेन्द्रसिंह शास्त्री यादव, 82. **जयपुर :** अनिलकुमारजी शास्त्री सोजना, 83. **जयपुर :** संजयजी शास्त्री बडामलहरा, 84. **जयपुर :** पण्डित मनीषजी शास्त्री कहान जयपुर, 85. **जयपुर :** पण्डित गजेन्द्रजी शास्त्री बडामलहरा, 86. **जयपुर :** पण्डित संजीवजी शास्त्री खडैरी।

गुजरात प्रान्त

1. **बड़ौदा :** पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री, देवलाली 2. **अहमदाबाद (वस्त्रापुर) :** पण्डित संजयकुमारजी शास्त्री, जेवर 3. **अहमदाबाद (नवरंगपुरा) :** पण्डित संजीवकुमारजी गोधा, जयपुर 4. **अहमदाबाद (मणीनगर) :** पण्डित मिठाभाई दोशी, हिम्मतनगर 5. **अहमदाबाद (पालडी) :** पण्डित संजयजी शास्त्री, बांसवाडा 6. **अहमदाबाद (ओढव) :** पण्डित सुरेशचन्दजी शास्त्री, गुना 7. **अहमदाबाद (मेघाणीनगर) :** पण्डित तपिशजी शास्त्री, उदयपुर 8. **अहमदाबाद (आशीषनगर) :** पण्डित ऋषभकुमारजी शास्त्री 9. **हिम्मतनगर :** पण्डित नीलेशभाई, मुम्बई 10. **राजकोट :** डॉ. उत्तमचन्दजी जैन, सिवनी 11. **दाहोद :** पण्डित अरहन्तप्रकाश झांझरी, उज्जैन 12. **रखियाल :** पण्डित आशु शास्त्री, झालरापाटन, जयपुर 13. **तलोद :** पण्डित शैलेषभाई शाह, तलौद 14. **वापी :** पण्डित रमेशचन्दजी शास्त्री, जयपुर 15. **अहमदाबाद नरौडा :** ब्र. पुष्पाबेन झांझरी उज्जैन 16. **अहमदाबाद (बहिरामपुरा) :** पण्डित रवीन्द्र शास्त्री, अंबड 17. **अहमदाबाद (अमराईवाडी) :** पण्डित उदयमणि शास्त्री भिण्ड 18. **अहमदाबाद (पार्श्वनाथ चैत्यालय) :** पण्डित रमेशचंदजी मंगल, सोनगढ 19. **अहमदाबाद नरौडा :** ब्र. ज्ञानधारा झांझरी उज्जैन 20. **जहेर :** पण्डित सचिन शास्त्री, गडखोडा, जयपुर 21. **नवसारी :** पण्डित साकेत शास्त्री, जयपुर 22. **अहमदाबाद (ओढव) :** विदुषी अनुभूति शास्त्री गुना, 23. **वापी :** पण्डित अनुरागजी शास्त्री भगवां, 24. **अहमदाबाद :** पण्डित रत्नेशजी मेहता हिम्मतनगर, **25. सूरत :** पण्डित अरुणकुमारजी शास्त्री मौ, **26. चैतन्यधाम :** पण्डित सचिनजी शास्त्री गढी, **27. दाहोद :** पण्डित राकेशजी दोशी शास्त्री परतापुर, **28. अहमदाबाद :** पण्डित अभिषेकजी शास्त्री सिलवानी, 29. **सूरत :** पण्डित धर्मेन्द्रजी शास्त्री बडामलहरा, 30. **अहमदाबाद :** पण्डित ध्रुवेशजी शाह।

उत्तरप्रदेश प्रान्त

1. **अलीगढ़ (मंगलायतन) :** डॉ. दीपक जैन शास्त्री, जयपुर 2. **अलीगढ़ (मंगलायतन) :** पण्डित अशोकजी लुहाड़िया, बिजौलिया 3. **मैनपुरी :** पण्डित पदमचंदजी गंगवाल इन्दौर 4. **खतौली :** पण्डित शिखरचन्दजी जैन, विदिशा 5. **रुडकी :** पण्डित जिनेन्द्र शास्त्री, उदयपुर 6. **मुज्जफरनगर :** पण्डित सुरेशचन्दजी इंजी., भोपाल 7. **ललितपुर :** पण्डित पदमकुमारजी अजमेरा, इन्दौर 8. **कुरावली :** पण्डित कमलेशजी शास्त्री, बाँसवाड़ा 9. **मेरठ (तीरगरान) :** पण्डित गुलाबचन्दजी जैन, बीना 10. **बड़ौत :** पण्डित रतनचन्दजी शास्त्री, कोटा 11. **भौगाँव :** पण्डित संजयजी शास्त्री अजनौर 12. **मडावरा :** पण्डित आशीष शास्त्री, कोटडी, कोटा 13. **जैतपुरकला**

: पण्डित राजीव शास्त्री, थानागाजी 14. **कानपुर (किदवईनगर) :** पण्डित अखलेश जैन, कोटा 15. **शिकोहाबाद :** पण्डित सुरेशचन्दजी अटेट रोड, भिण्ड 16. **कुर्राचितपुर :** पण्डित नरेशजी शास्त्री भगवां 17. **धामपुर :** पण्डित अभय शास्त्री, ग्वालियर 18. **कायमगंज :** पण्डित अंकितजी शास्त्री खड़ैरी ध्रुवधाम, 19. **करहल :** पण्डित पवनकुमारजी शास्त्री मुम्बई 20.21. **गंगेरू :** पण्डित विवेकजी शास्त्री एवं पण्डित प्रियमजी शास्त्री 22. **सहारनपुर :** पण्डित अंकित शास्त्री, लूणदा 23. **एतमादपुर :** पण्डित प्रमोदजी मकरोनिया, सागर 24. **जसवंतनगर :** पण्डित जगदीशजी पवार, उज्जैन 25. **एटा :** पण्डित प्रकाशचन्दजी ज्योतिर्विद, मैनपुरी 26. **खतौली :** पण्डित दीपांशु शास्त्री, कोटा 27. **शेरकोट :** पण्डित प्रदीपजी शास्त्री, खतौली 28. **लखनऊ :** पण्डित श्रेयांसकुमारजी शास्त्री, जबलपुर 29. **झांसी :** पण्डित अमितेन्द्र शास्त्री, जयपुर 30. **कानपुर (मुमुक्षु मण्डल) :** पण्डित पंकज शास्त्री, बमनी, जयपुर 31. **गूढ़ा :** पण्डित अनिल शास्त्री, भिण्ड 32. **राजा का ताल :** पण्डित अखिलेश जैन शास्त्री घुवारा, 33.34. **खतौली :** पण्डित दीपकजी शास्त्री एवं पण्डित राहुलजी शास्त्री खड़ैरी, 35. **कुरावली :** पण्डित शुभमजी शास्त्री अलीगढ 36. **अलीगढ (मंगलायतन विश्वविद्यालय) :** डॉ. शुद्धात्मप्रकाशजी शास्त्री, 37.38.39. **आगरा :** पण्डित निलयजी शास्त्री टीकमगढ, पण्डित गणतंत्रजी शास्त्री खरगापुर एवं पण्डित निपुणजी शास्त्री टीकमगढ।

अन्य प्रान्त

1. **भागलपुर :** ब्र. अभिनन्दनकुमारजी शास्त्री, खनियांधाना 2. **कोलकाता :** पण्डित राजकुमारजी शास्त्री, बाँसवाड़ा 3. **बेलगाँव :** पण्डित धर्मेन्द्रजी शास्त्री, कोटा 4. **बैंगलौर :** पण्डित धनसिंहजी ज्ञायक, पिड़ावा 5. **रानीपुर (हरिद्वार) :** पण्डित मनोजजी, मुजफ्फरनगर 6. **हिसार :** डॉ. ऋषभ शास्त्री, ललितपुर 7. **लुधियाना :** पण्डित विवेक मोदी, सागर 8. **मिहिजाम (झारखण्ड) :** पण्डित शीतलजी मुगद, नवलूर 9. **हुबली :** पण्डित शीतलजी मुगदल, नवतूर 10. **बेलगाँव :** मिथुन पुदाली, शास्त्री शिरगुप्पी 11. **बेलगाँव :** पण्डित सुधर्म शास्त्री, बेलगाँव 12. **नाहन जिला सिरमौर (हि.प्र.) :** पण्डित प्रवेश भारिल्ल, करेली 13. **एरनाकुल्लम (केरल) :** पण्डित महावीर शास्त्री, टोकर 14. **यमुनानगर (हरियाणा) :** पण्डित अंचलजी शास्त्री, ललितपुर 15. **बागेवाड़ी (गुरुकुल) :** पण्डित संतोष शास्त्री, जयपुर 16. **बागेवाडी (नगर) :** पण्डित अलप्पा हदिमणि तेरदाल 17. **पानीपत :** ब्र.रवीन्द्रकुमारजी ललितपुर 18. **देहरादून (विकासनगर) :** पण्डित अनुभव जैन, केलवाडा 19. **फिरोजपुर (पंजाब) :** पण्डित सौरभजी शास्त्री खडैरी, 20. **अम्बिकापुर (छत्तीसगढ) :** पण्डित नेमिचंदजी शास्त्री ध्रुवधाम 21. **हैदराबाद :** डॉ. राजेन्द्रकुमारजी बंसल अमलाई, **22. कोलकाता :** पण्डित अमितजी शास्त्री फुटेरा, **23. मदुरई :** पण्डित अजयजी शास्त्री पीसांगन, **24. बैंगलोर :** पण्डित किशोरजी शास्त्री बंड, **25. दावणगेरे :** पण्डित भरतजी शास्त्री कोरी, **26. खैरागढ :** पण्डित प्रवीणजी शास्त्री रायपुर, **27. बीनापुर :** पण्डित अनेकान्तजी शास्त्री उगार, **28. चम्पापुर :** पण्डित जागेशजी शास्त्री जबेरा,29. **बैंगलोर :** पण्डित अनंतराज

शास्त्री मंडला, 30. **सम्मेदशिखरजी (तारण भवन) :** पण्डित राजेन्द्रकुमारजी अमरपाटन, 31. **सम्मेदशिखरजी (कहान नगर) :** पण्डित चन्दुलालजी जैन कुशलगढ **32. अंबिकापुर :** पण्डित नेमिचंदजी जैन नीमौन 33. **देहरादून :** पण्डित नवीन जैन, मौ।

दिल्ली

1. **दिल्ली (आत्मार्थी ट्रस्ट) :** ब्र. जतीशचन्दजी शास्त्री, सनावद 2. **दिल्ली :** पण्डित सुनील धवल, भोपाल 3. पण्डित कैलाशचन्दजी, बीकानेर 4. पण्डित पंकज शास्त्री, बण्डा 5. पण्डित राहुल शास्त्री, दमोह 6. पण्डित अभिनवजी, मैनपुरी 7. पण्डित सौरभजी शास्त्री, शाहगढ़ 8. पण्डित देवांग गाला, मुम्बई 9. पण्डित अशोकजी शास्त्री, उज्जैन 10. पण्डित रोहितजी शास्त्री, आनन्दपुरी 11. पण्डित चैतन्यजी शास्त्री, जबलपुर 12. पण्डित अभिषेकजी शास्त्री, आंजना 13. पण्डित गौरवजी शास्त्री, बावली 14. पण्डित मेघवीरजी शास्त्री, घाटोल 15. पण्डित सौरभजी शास्त्री, परतापुर 16. पण्डित नीरजजी शास्त्री, नोगामा 17. पण्डित रॉकीजी शास्त्री, डडुका 18. पण्डित सुमितजी शास्त्री, छिंदवाड़ा 19. पण्डित अविनाशजी शास्त्री, छिंदवाड़ा 20. पण्डित धीरजजी शास्त्री, जबेरा 21. पण्डित निशंक जैन, टीकमगढ़ 22. पण्डित राहुल शास्त्री, बदरवास 23. पण्डित अरविन्द शास्त्री, टीकमगढ़ 24. पण्डित दीपकजी शास्त्री, खनियाँधाना 25. पण्डित विक्रान्त शास्त्री, भगवाँ 26. पण्डित तन्मय शास्त्री, भोपाल 27. पण्डित सचिन शास्त्री, जबेरा 28. पण्डित अविरल सिंघई, विदिशा 29. पण्डित अंकुर जैन मैनपुरी, कोटा 30. पण्डित समकित बांझल गुना, कोटा 31. पण्डित समकित मोदी सागर, कोटा 32. पण्डित नीलेश शास्त्री, गुहाटी 33. पण्डित समकित मंगलार्थी, दिल्ली 34. **दिल्ली (विश्वासनगर) :** पण्डित राकेशजी, नागपुर 35. **दिल्ली (उस्मानपुर) :** पण्डित तेजकुमारजी गंगवाल, इन्दौर 36. **दिल्ली (मयूर विहार) :** पण्डित राकेशजी शास्त्री, लोणी 37. **दिल्ली (मयूर विहार) :** विदुषी ईर्या शास्त्री, जयपुर 38. **दिल्ली (पडपडगंज) :** विदुषी श्रुति शास्त्री, जयपुर 39. **दिल्ली :** पण्डित वीरेन्द्रजी शास्त्री बकस्वाहा, 40. पण्डित रवीन्द्रजी शास्त्री बकस्वाहा, 41. पण्डित समकितजी शास्त्री गुना, 42. पण्डित विवेकजी शास्त्री मडदेवरा, 43. डॉ. अशोकजी गोयल बण्डा, 44. पण्डित दीपेशजी शास्त्री गुढा, 45. ऋषभकुमारजी शास्त्री उस्मानपुर, 46. डॉ. अनेकान्तजी शास्त्री वाराणसी, 47. डॉ. वीरसागरजी शास्त्री गुढाचंद्रजी, 48. डॉ. सुदीपजी शास्त्री ललितपुर, 49. पण्डित प्रमोदकुमारजी शास्त्री शाहगढ, 50.51. पण्डित संजीवजी शास्त्री बारां एवं पण्डित प्रयंकजी शास्त्री रहली।

पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के समस्त ऑडियो - वीडियो प्रवचन साहित्य एवं अन्य अनेक जानकारियों के लिये अवश्य देखें -
वेबसाईट - www.vitragvani.com
संपर्क सूत्र-श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई
Ph.: 022-26130820, 26104912, E-Mail- info@vitragvani.com